संजीव रिफ्रेशर

हिन्दी

क्षितिज भाग-2 एवं कृतिका भाग-2

(कक्षा-10)

पाठ्यक्रम 'अ'

[नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत CBSE द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यक्रम एवं NCERT द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यपुस्तकों पर आधारित]

मुख्य विशेषताएँ

- CBSE द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यक्रम एवं नवीनतम पाठ्यपुस्तकों पर पूर्णत: आधारित
- पाठ्यक्रमानुसार सभी प्रकार के प्रश्नों का समावेश
- सभी पद्य पाठों के कवियों का जीवन परिचय
- सभी पद्य पाठों का परिचय
- सम्पूर्ण कविताओं का कठिन शब्दार्थ सहित भावार्थ
- सभी गद्य पाठों के लेखकों का जीवन परिचय
- सभी गद्य पाठों का सार
- सभी गद्य पाठों के कठिन शब्दों के अर्थ
- पद्यांश एवं गद्यांश पर आधारित बहुचयनात्मक प्रश्न
- पाठ्यपुस्तक के सभी प्रश्न
- पाठ्यक्रमानुसार अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न
- सरल, स्तरीय भाषा-शैली में विषय-प्रतिपादन
- अपठित बोध एवं व्याकरण
- अनुच्छेद-लेखन; पत्र-लेखन; स्ववृत्त-लेखन; ई-मेल लेखन; विज्ञापन-लेखन एवं संदेश-लेखन

प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

जयपुर

मूल्य :
₹ 260.00

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

लेजर टाइपसैटिंग :
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

★ ★ ★ ★ ★

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं-
  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

CBSE द्वारा जारी
पाठ्यक्रम

हिंदी पाठ्यक्रम-अ (कोड सं. 002)

कक्षा 10वीं हिंदी- 'अ' परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन 2024-25

खंड		भारांक
क	अपठित बोध	14
ख	व्यावहारिक व्याकरण	16
ग	पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक	30
घ	रचनात्मक लेखन	20

भारांक–[80 (वार्षिक बोर्ड परीक्षा) + 20 (आंतरिक परीक्षा)]

निर्धारित समय-3 घंटे भारांक-80

वार्षिक बोर्ड परीक्षा हेतु भार विभाजन				
खंड-क (अपठित बोध)				
		विषयवस्तु	उप भार	कुल भार
1.	अपठित गद्यांश व काव्यांश पर बोध, चिंतन, विश्लेषण, सराहना आदि पर बहुविकल्पीय, अतिलघूत्तरात्मक एवं लघूत्तरात्मक प्रश्न			14
	अ	एक अपठित गद्यांश लगभग 250 शब्दों का, इसके आधार पर एक अंकीय तीन बहुविकल्पी प्रश्न $(1 \times 3 = 3)$, अतिलघूत्तरात्मक एवं लघूत्तरात्मक प्रश्न $(2 \times 2 = 4)$ पूछे जाएँगे।	7	
	ब	एक अपठित काव्यांश लगभग 120 शब्दों का, इसके आधार पर एक अंकीय तीन बहुविकल्पी प्रश्न $(1 \times 3 = 3)$, अतिलघूत्तरात्मक एवं लघूत्तरात्मक प्रश्न $(2 \times 2 = 4)$ पूछे जाएँगे।	7	
2.	व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषयवस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न। (1×16) कुल 20 प्रश्न पूछे जाएँगे, जिनमें से केवल 16 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।			16
	खंड-ख (व्यावहारिक व्याकरण)			
	1.	रचना के आधार पर वाक्य भेद $(1 \times 4 = 4)$ (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	
	2.	वाच्य $(1 \times 4 = 4)$ (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	
	3.	पद परिचय $(1 \times 4 = 4)$ (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	
	4.	अलंकार–(अर्थालंकार : उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, मानवीकरण) $(1 \times 4 = 4)$ (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	

3.		**खंड-ग (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)**			
	अ	**गद्य खंड पाठ्यपुस्तक (क्षितिज भाग 2)**		11	
		1.	क्षितिज (भाग 2) से निर्धारित पाठों में से गद्यांश के आधार पर विषयवस्तु का ज्ञान, बोध, अभिव्यक्ति आदि पर एक अंकीय पाँच बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे। (1 × 5)	5	
		2.	क्षितिज (भाग 2) से निर्धारित पाठों में से विषयवस्तु का ज्ञान, बोध, अभिव्यक्ति आदि पर तीन प्रश्न पूछे जाएँगे। (विकल्प सहित-25-30 शब्द-सीमा वाले 4 में से 3 प्रश्न करने होंगे) (2 × 3)	6	
	ब		**काव्य खंड पाठ्यपुस्तक (क्षितिज भाग-2)**	11	30
		1.	क्षितिज (भाग 2) से निर्धारित कविताओं में से काव्यांश के आधार पर एक अंकीय पाँच बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे। (1 × 5)	5	
		2.	क्षितिज (भाग 2) से निर्धारित कविताओं के आधार पर विद्यार्थियों का काव्य-बोध परखने हेतु तीन प्रश्न पूछे जाएँगे। (विकल्प सहित-25-30 शब्द-सीमा वाले 4 में से 3 प्रश्न करने होंगे) (2 × 3)	6	
	स		**पूरक पाठ्यपुस्तक (कृतिका भाग-2)**	8	
			कृतिका (भाग 2) से निर्धारित पाठों पर आधारित दो प्रश्न पूछे जाएँगे। (4 × 2) (विकल्प सहित-50-60 शब्द-सीमा वाले 3 में से 2 प्रश्न करने होंगे)	8	
4.		**खंड-घ (रचनात्मक लेखन)**			
	(i)	विभिन्न विषयों और संदर्भों पर विद्यार्थियों के तर्कसंगत विचार प्रकट करने की क्षमता को परखने के लिए संकेत-बिंदुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लेखन। (6 × 1 = 6)		6	
	(ii)	अभिव्यक्ति की क्षमता पर केन्द्रित औपचारिक अथवा अनौपचारिक विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 100 शब्दों में पत्र। (5 × 1 = 5)		5	20
	(iii)	रोजगार से संबंधित रिक्तियों के लिए लगभग 80 शब्दों में स्ववृत्त लेखन (5 × 1 = 5)		5	

		अथवा विविध विषयों पर आधारित लगभग 80 शब्दों में ई-मेल लेखन (5 × 1 = 5)		
	(iv)	विषय से संबंधित लगभग 40 शब्दों के अन्तर्गत विज्ञापन लेखन (4 × 1 = 4) अथवा संदेश लेखन लगभग 40 शब्दों में (शुभकामना, पर्व-त्योहारों एवं विशेष अवसरों पर दिये जाने वाले संदेश) (4 × 1 = 4)	4	
		कुल		**80**
		आंतरिक मूल्यांकन	**अंक**	20
	अ	**सामयिक आकलन**	5	
	ब	**बहुविध आकलन**	5	
	स	**पोर्टफ़ोलियो**	5	
	द	**श्रवण एवं वाचन**	5	
		कुल		**100**

निर्धारित पुस्तकें :

1. **क्षितिज, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण
2. **कृतिका, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण

कक्षा दसवीं हेतु प्रश्न-पत्र का विस्तृत प्रारूप जानने के लिए कृपया बोर्ड द्वारा जारी आदर्श प्रश्न-पत्र देखें।

विषय-सूची

क्षितिज भाग-2

काव्य-खण्ड

1. सूरदास 1-11
2. तुलसीदास 12-23
3. जयशंकर प्रसाद 24-33
4. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' 34-44
5. नागार्जुन 45-58
6. मंगलेश डबराल 59-69

गद्य-खण्ड

7. नेताजी का चश्मा (स्वयं प्रकाश) 70-88
8. बालगोबिन भगत (रामवृक्ष बेनीपुरी) 89-106
9. लखनवी अंदाज (यशपाल) 107-119
10. एक कहानी यह भी (मन्नू भण्डारी) 120-140
11. नौबतखाने में इबादत (यतीन्द्र मिश्र) 141-161
12. संस्कृति (भदंत आनंद कौसल्यायन) 162-172

कृतिका भाग-2
(पूरक-पुस्तक)

1. माता का अँचल (शिवपूजन सहाय) 173-182
2. साना-साना हाथ जोड़ि ..... (मधु कांकरिया) 183-195
3. मैं क्यों लिखता हूँ? (अज्ञेय) 196-201

अपठित बोध

1. अपठित गद्यांश 202-226
2. अपठित काव्यांश 227-255

व्याकरण

1. रचना के आधार पर वाक्य-भेद 256-264
2. वाच्य 265-271
3. पद-परिचय 272-277
4. अलंकार 278-287

रचनात्मक लेखन

1. अनुच्छेद-लेखन 288-313
2. पत्र-लेखन
   (औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र) 314-352
3. स्ववृत्त-लेखन 353-364
4. ई-मेल लेखन 365-377
5. विज्ञापन-लेखन 378-391
6. संदेश-लेखन 392-403

हिन्दी कक्षा-10
क्षितिज भाग-2
काव्य-खण्ड

1. सूरदास

कवि-परिचय

जीवन-परिचय—सूरदास का जन्म सन् 1478 में माना जाता है। एक मान्यता के अनुसार इनका जन्म मथुरा के समीप 'रुनकता' या रेणुका क्षेत्र में हुआ, जबकि अन्य मान्यता के अनुसार इनका जन्म-स्थान दिल्ली के पास 'सीही' नामक गाँव माना जाता है। ये अल्पायु में ही विरक्त होकर मथुरा एवं वृन्दावन के मध्य 'गऊघाट' पर रहकर भक्ति-गायन करते थे। वहीं पर महाप्रभु वल्लभाचार्य ने उन्हें अपना शिष्य बनाया और पुष्टिमार्ग में दीक्षित किया। तब वे श्रीनाथ के मन्दिर में भक्ति-गायन करते रहे। सन् 1583 में पारसौली में उनका देहान्त हो गया।

रचनाएँ—सूरदास ने अपने आराध्य श्रीकृष्ण की लीलाओं से सम्बन्धित हजारों पदों की रचनाएँ कीं। सूर की तीन रचनाएँ प्रसिद्ध हैं—'सूरसागर', 'साहित्य लहरी' और 'सूर सारावली'। 'सूरसागर' उनकी कीर्ति का प्रमुख ग्रन्थ है। 'सूरसागर' में विविध राग-रागिनियों में श्रीकृष्ण की लीलाओं का समधुर वर्णन किया गया है।

काव्यगत विशेषताएँ—सूरदास ने अपने आराध्य की बाल-लीलाओं, रूप-छवि, संयोग-वियोग, शृंगार, वात्सल्य एवं भक्ति से सम्बन्धित पदों की रचना कर अपनी भक्ति-भावना की अभिव्यक्ति की। शृंगार एवं वात्सल्य के वे अद्वितीय कवि माने जाते हैं। बाल-लीला की मनोरम झाँकियों का वर्णन करने में वे बेजोड़ माने जाते हैं। इन्होंने 'भ्रमर-गीत' में सगुण भक्ति का सुन्दर प्रतिपादन किया है।

भाषा-शैली—सूरदास के समस्त पद विविध राग-रागिनियों में निबद्ध होने से सुगेय हैं। ये श्रेष्ठ गायक कवि प्रतीत होते हैं। सूरदास के पदों की भाषा शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा है; जिसमें कोमलता, मधुरता एवं लावण्य विद्यमान है। उन्होंने अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग किया है। उक्त अनेक विशेषताओं के कारण सूर को हिन्दी-साहित्याकाश का सूर्य माना जाता है।

पाठ-परिचय

पाठ में संकलित चारों पद 'भ्रमरगीत' से लिये गये हैं। मथुरा से श्रीकृष्ण के सन्देशवाहक रूप में आये उद्धव पर भ्रमर के बहाने गोपियों ने अनेक व्यंग्य-बाण छोड़े हैं। वे कभी तो उपालम्भ देती हैं तो कभी अपनी विरह-व्यथा व्यक्त करती हैं।

प्रथम पद में गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव, तुम बड़े सौभाग्यशाली हो, जो प्रेम के चक्कर में नहीं पड़े हो। तुमने कभी प्रेम का स्वाद नहीं चखा है। ये तो हम ही मूर्खा हैं जो कृष्ण-प्रेम में ऐसे लिपट गईं, जैसे गुड़ में चींटी लिपट जाती है।

द्वितीय पद में गोपियाँ प्रियतम कृष्ण को निष्ठुर कहती हैं। वे यह स्वीकार करती हैं कि उनके मन की आस मन में ही रह गई है। वे प्रियतम के आने की बाट जोह रही थीं, परन्तु वे न आये और हमारे लिए योग-साधना का सन्देश भेज दिया। इससे हमें निराशा हो रही है।

तृतीय पद में गोपियाँ उद्धव की योग-साधना को कड़वी ककड़ी जैसी बताकर कृष्ण के प्रति हारिल पक्षी की लकड़ी के समान अपनी प्रेमनिष्ठा व्यक्त करती हैं तथा कृष्ण को ही अपना जीवनाधार बताती हैं।

चतुर्थ पद में गोपियाँ व्यंग्य करती हुई कहती हैं कि कृष्ण पहले से ही चतुर थे और अब उन्होंने मथुरा में रहते हुए राजनीति भी सीख ली है। वे हमें योग-मार्ग अपनाने की बात कहकर अन्याय कर रहे हैं। उनका ऐसा व्यवहार अन्यायपूर्ण और राजधर्म के विपरीत है।

काव्यांश के आधार पर बहुविकल्पीय प्रश्न

पद

(1)

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी॥

कठिन-शब्दार्थ–**बड़भागी** = भाग्यशाली। **अपरस** = अछूता, अलिप्त। **तगा** = धागा, बन्धन। **नाहिन** = नहीं। **पुरइनि पात** = कमल का पत्ता। **माहँ** = में। **प्रीति** = प्रेम। **पाउँ** = पाँव। **बोर्‌यौ** = डुबोया। **परागी** = मोहित हुई। **भोरी** = भोली। **गुर** = गुड़। **पागी** = लिपटी हुई।

भावार्थ–गोपियाँ उद्धव की प्रेमहीनता पर व्यंग्य कर कहती हैं कि हे उद्धव! तुम सचमुच बड़े भाग्यशाली हो, क्योंकि तुम कभी प्रेम के धागे से नहीं बँधे हो, अर्थात् कृष्ण के प्रेम-बन्धन से सर्वथा मुक्त हो। तुम प्रेम-बंधन से उसी प्रकार सर्वथा मुक्त रहते हो, जिस प्रकार कमल का पत्ता हमेशा जल में रहता है, परन्तु उस पर जल का एक भी दाग नहीं लग पाता अर्थात् उस पर जल की एक बूँद भी नहीं ठहर पाती है। अथवा तेल की मटकी को जल के भीतर डुबोने पर भी उस पर जल की एक बूँद भी नहीं ठहरती है। इसी प्रकार तुम भी प्रेम-रूप कृष्ण के हमेशा पास रहते हुए भी कभी उनसे प्रेम नहीं करते, उनके प्रभाव से हमेशा मुक्त बने रहते हो।

गोपियाँ कहती हैं कि तुमने आज तक कभी भी प्रेम-नदी में अपना पैर तक नहीं डुबोया अर्थात् कभी प्रेम के पास तक नहीं फटके और तुम्हारी दृष्टि किसी के रूप को देखकर उस पर मोहित नहीं हुई है। परन्तु हम तो भोली-भाली अबलाएँ हैं, जो अपने प्रियतम कृष्ण की रूप-माधुरी पर उसी प्रकार आसक्त होकर उनके प्रेम में मोहित हो गई हैं, जैसे चींटी गुड़ पर आसक्त होकर उसके ऊपर चिपट जाती है और फिर उससे अलग नहीं हो पाती है और वहीं अपने प्राण दे देती है।

1. गोपियों ने उद्धव को कैसा बताया है?
(अ) भाग्यहीन (ब) भाग्यवादी (स) अभागा (द) बड़े भाग्य वाला

2. 'पुरइनि पात रहत जल भीतर' पद में 'पुरइनि पात' से आशय है–
(अ) पूर्वी हवा (ब) पुराना पत्ता (स) कमल का पत्ता (द) पैर रूपी पत्ता

3. 'ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि' पद में तेल की गगरी किसे कहा गया है?
(अ) कृष्ण (ब) राधा (स) गोपियाँ (द) उद्धव

4. गोपियों के अनुसार उद्धव का स्वरूप कृष्ण-प्रेम में कैसा था?
(अ) आसक्त (ब) लिप्त (स) मुक्त (द) निर्लिप्त

5. सूरदास की गोपियों ने स्वयं को कैसा बताया है?
(अ) चतुर (ब) वाचाल (स) भोली (द) समझदार

उत्तर–1. (द) 2. (स) 3. (द) 4. (द) 5. (स)

(2)

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही॥

(सीबीएसई, 2024)

कठिन-शब्दार्थ–**माँझ** = में। **अवधि** = समय। **अधार** = आधार, सहारा। **आवन की** = आने की। **बिथा** = पीड़ा। **बिरह** = वियोग, बिछुड़ना। **दही** = जली। **गुहारि** = रक्षा के लिए पुकारना। **धार** = योग की धारा। **धीर** = धैर्य। **धरहिं** = रखें, धारण करें। **मरजादा** = मर्यादा।

भावार्थ–कृष्ण द्वारा भेजा गया हृदय-विदारक सन्देश सुनकर गोपियाँ उद्धव को उलाहना देती हुई कहती हैं कि हे उद्धव! हमारे मन की मन में ही रह गयी, अर्थात् हमने सोचा था कि कृष्ण यहाँ लौटकर अवश्य आयेंगे और तब हम उनके विरह में सहे हुए सम्पूर्ण कष्टों की गाथा उन्हें सुनायेंगी। परन्तु अब तो उन्होंने स्वयं को भुलाकर निर्गुण-ब्रह्म की आराधना करने का अर्थात् योग-साधना का सन्देश भेजा है। हे उद्धव! तुम्हीं बताओ कि उनके द्वारा त्याग दिए जाने पर हम अपनी इस असह्य विरह-वेदना की कहानी किसे जाकर सुनाएँ? अब हमसे यह और अधिक सही नहीं जाती। अब तक हम उनके आने की अवधि के सहारे अपने तन और मन से इस विरह-व्यथा को सहती आ रही थीं। परन्तु अब तुम्हारे द्वारा दिए गये इस योग-सन्देश को सुन-सुनकर हमारी विरह-व्यथा और भड़क उठी है। विरह-सागर में डूबती हुई हम गोपियों को जहाँ से सहायता मिलने की आशा थी, अब उसी स्थान से इस योग-साधना के सन्देश रूपी जल की ऐसी तेज धारा बही है कि वह हमारे प्राण लेकर के ही रुकेगी। अर्थात् हम जिसे अपना रक्षक मान रही थीं, उसने ही हमें योग-साधना के सन्देश की धारा से बहा दिया है। सूरदास के अनुसार गोपियाँ कहने लगीं कि अब तो कृष्ण ने सारी लोक-मर्यादाएँ छोड़ दी हैं। उन्होंने हमारा प्रेम निभाने की बजाय हमारे साथ छल किया है, अतः हम अब धैर्य कैसे धारण करें?

1. गोपियों को अपना धैर्य टूटता हुआ-सा क्यों लग रहा था?
(अ) विरहाग्नि के और बढ़ जाने के कारण। (ब) उद्धव के योग ज्ञान को सुन-सुनकर।
(स) उद्धव के धीरज से प्रभावित होकर। (द) अपने प्रति कृष्ण के शुष्क व्यवहार से।

6 संदेश-लेखन

अभिप्राय–जब कोई सूचना, किसी व्यक्ति विशेष या फिर समूह को, जो उस समय व्यक्तिगत रूप से मौजूद नहीं होता, को लिखित रूप में भेजते हैं, तो उसे संदेश कहते हैं। संदेश के माध्यम से भेजी जाने वाली जानकारी या समाचार को संदेश प्राप्तकर्ता जब चाहे पढ़ सकता है।

संदेश लेखन के समय ध्यान में रखने योग्य बातें–

(1) संदेश लेखन शब्द सीमा में होना चाहिए। संदेश कम से कम 30 व अधिकतम 60 शब्दों में लिखा जाना चाहिए।

(2) संदेश लिखते समय सबसे ऊपर 'संदेश' शब्द अवश्य लिखना चाहिए, उसके बाद दिनांक और समय लिखा जाना चाहिए।

(3) संदेश हमेशा बॉक्स या गोले के अन्दर ही लिखा जाना चाहिए।

(4) संदेश गागर में सागर हो यानी कम शब्दों में अधिक सार हो।

(5) संदेश रचनात्मक और सृजनात्मक होना चाहिए।

(6) संदेश हमेशा विषयवस्तु को ध्यान में रखकर लिखना चाहिए, अनावश्यक बातों से बचना चाहिए।

संदेश लेखन के कारण–संदेश औपचारिक या अनौपचारिक किसी भी कारण से लिखा जा सकता है। औपचारिक संदेश किसी अधिकारी या किसी ऑफिस के कर्मचारी या फिर जनसामान्य को सार्वजनिक रूप से लिखा जा सकता है, जबकि अनौपचारिक संदेश किसी करीबी जैसे–मित्रगण, परिजन या रिश्तेदार को लिखा जाता है।

संदेश भेजने के माध्यम–आजकल संदेश भेजने के बहुत से माध्यम हैं, जैसे–व्हाट्सएप, एसएमएस, ट्विटर, फेसबुक, ई-मेल इत्यादि। इनके माध्यम से कम समय में अधिक लोगों तक संदेश भेजा जा सकता है।

संदेश लेखन के प्रकार–आजकल संदेश लेखन के अनेक रूपों का प्रचलन है, जिनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण संदेश लेखन के प्रकार निम्नलिखित हैं–

(1) शुभकामना संदेश–वर्तमान समय में यह संदेश लेखन का एक महत्त्वपूर्ण प्रकार है। आजकल की भागदौड़ भरी जीवनशैली में व्यक्ति के पास इतना समय नहीं रहता कि स्वयं उपस्थित होकर शुभकामना का संदेश दे सके। इसलिए समय की कीमत समझते हुए किसी व्यक्ति को जन्मदिन, सालगिरह, सफलता या पदोन्नति होने पर शुभकामना देते हुए संदेश भेजा जा सकता है।

(2) पर्व या त्यौहार संदेश–आजकल लोग त्यौहारों जैसे–होली, दीपावली, नववर्ष, क्रिसमस, स्वतंत्रता दिवस आदि विशेष अवसरों पर भी संदेश भेजते हैं।

(3) शोक या सांत्वना संदेश–किसी व्यक्ति की पुण्यतिथि या मृत्यु पर भेजा जाने वाला संदेश इस श्रेणी में आता है।

(4) व्यक्तिगत संदेश–कहीं आने-जाने से सम्बन्धित जानकारी देने हेतु या बधाई देने के लिए केवल परिजनों को भेजा जाने वाला संदेश इस श्रेणी में आता है।

(5) सामाजिक संदेश–जब जानकारी किसी एक व्यक्ति तक न पहुँचाकर सम्पूर्ण समाज को देनी हो, तब सामाजिक संदेश भेजा जाता है। जैसे–सामाजिक या धार्मिक कार्यक्रमों से जुड़े आयोजनों के लिए समाज के बड़े समूह को संदेश भेजना हो। इसके अलावा समाज को जागरूकता संदेश देने हेतु जैसे–बिजली बचाओ, सबको पढ़ाओ, वृक्ष लगाओ, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ आदि।

(6) मिश्रित संदेश–तत्कालीन समस्या जैसे–महामारी, बाढ़, तूफान, भूकम्प इत्यादि से सम्बन्धित कोई जानकारी जनमानस तक पहुँचानी हो।

संदेश लेखन के अंग/भाग–संदेश लेखन के प्रमुख भाग निम्न प्रकार हैं–

शीर्षक–संदेश लिखते समय सर्वप्रथम शीर्षक लिखा जाता है, जैसे—हिन्दी दिवस की शुभकामना हेतु संदेश।

दिनांक–शीर्षक लिखने के बाद दिनांक लिखी जानी चाहिए। जैसे–दिनांक 24 मई, 20××

समय–दिनांक के बाद समय लिखा जाता है। जिस समय संदेश लिखा जाता है, वह समय संदेश में लिखा जाता है। जैसे–समय 1:00 बजे दोपहर

अभिवादन–जिसको संदेश लिखा जाना है, उसको श्रद्धापूर्वक अभिवादन लिखा जाता है। जैसे–आदरणीय पिताजी, आदरणीय माताजी।

मुख्य भाग–जिस कारण से संदेश लिखा जाता है, वह संदेश का मुख्य भाग होता है। कम से कम शब्दों में अपनी बात पूर्ण रूप से कहनी चाहिए।

प्रेक्षक–अन्त में संदेश भेजने वाले का नाम लिखा जाता है।

संदेश लेखन के महत्त्व–संदेश लेखन के महत्त्व निम्नलिखित हैं–

(1) समय की बचत होती है।
(2) संदेश से भावनाओं का आदान-प्रदान होता है।
(3) संदेश से अपनापन बढ़ता है।
(4) संदेश की सामाजिक जागरूकता में अहम भूमिका है।
(5) संदेश से किसी महत्त्वपूर्ण बदलाव की जानकारी कर्मचारियों को मिलती रहती है।
(6) सामूहिक कार्यक्रमों में संदेश की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
(7) संदेश मन का जुड़ाव है।
(8) संदेश आत्मीयता की भावना है।

संदेश

प्रश्न 1. आप अवनि/अर्जुन हैं। आपकी बड़ी बहन का भारतीय वायु सेना में पायलट पद के लिए चयन हो गया है। उन्हें बधाई देते हुए लगभग 40 शब्दों में एक संदेश लिखिए। *(सीबीएसई, 2024)*

उत्तर–

बड़ी बहन का पायलट पद पर चयन होने पर बधाई संदेश

दिनांक : 27 सितम्बर, 20××
समय : 11:15 AM
पूजनीया बहिन अमृता
आपका वायु सेना प्रतियोगिता परीक्षा में पायलट पद पर चयन होने पर हार्दिक बधाई। हम परिवारजन आशा करते हैं कि आपको हमेशा यों ही सफलताएँ मिलती रहें। यह आपकी कठिन मेहनत का ही परिणाम है। ईश्वर आपको हमेशा खुश एवं स्वस्थ रखें। एक बार फिर आपको चयनित होने पर हार्दिक बधाई देता हूँ/देती हूँ।
आपका छोटा भाई/छोटी बहिन
अर्जुन/अवनि

प्रश्न 2. आप अनन्य देव/मीना मोहनी हैं और जल्द ही आपके पिताजी की लिखी हुई दसवीं किताब प्रकाशित होने वाली है। उन्हें बधाई और शुभकामना का एक संदेश 60 शब्दों में लिखिए। *(सीबीएसई, 2023)*